शान्ति-प्राप्ति के लिए असीसी के सन्त फ्रांसिस की प्रार्थना

हे प्रभु, मुझे अपनी शान्ति का संवाहक बना। जहाँ घृणा हो, वहाँ मुझे प्रेम पैदा करने दे / जहाँ अपकार-भावना हो, वहाँ मैं क्षमा करूँ / जहाँ मन-भेद हो वहाँ एकता बनाऊँ / जहाँ शंका हो वहाँ श्रद्धा / जहाँ निराशा हो, वहाँ आशा / जहाँ अन्धकार हो, वहाँ प्रकाश/और जहाँ दु:ख हो, वहाँ आनन्द का संचार करने दे।

हे दिव्य गुरू / मुझ पर ऐसी कृपा कर कि मैं सांत्वना पाने की अपेक्षा सांत्वना देने का प्रयत्न करूँ / कोई मुझे समझे, इसकी अपेक्षा मैं दूसरों को समझूँ कोई मुझसे प्रेम करे, इसकी अपेक्षा मैं दूसरों से प्रेम करूँ/ क्योंकि दान में ही प्राप्ति मिलती है / क्षमा करने से ही क्षमा मिलती है / और मरण में ही हम अन्नत जीवन प्राप्त करते हैं।

शान्ति-प्राप्ति के लिए असीसी के सन्त फ्रांसिस की प्रार्थना

हे प्रभु, मुझे अपनी शान्ति का संवाहक बना। जहाँ घृणा हो, वहाँ मुझे प्रेम पैदा करने दे / जहाँ अपकार-भावना हो, वहाँ मैं क्षमा करूँ / जहाँ मन-भेद हो वहाँ एकता बनाऊँ / जहाँ शंका हो वहाँ श्रद्धा / जहाँ निराशा हो, वहाँ आशा / जहाँ अन्धकार हो, वहाँ प्रकाश/और जहाँ दु:ख हो, वहाँ आनन्द का संचार करने दे।

हे दिव्य गुरू / मुझ पर ऐसी कृपा कर कि मैं सांत्वना पाने की अपेक्षा सांत्वना देने का प्रयत्न करूँ / कोई मुझे समझे, इसकी अपेक्षा मैं दूसरों को समझूँ कोई मुझसे प्रेम करे, इसकी अपेक्षा मैं दूसरों से प्रेम करूँ/ क्योंकि दान में ही प्राप्ति मिलती है / क्षमा करने से ही क्षमा मिलती है / और मरण में ही हम अन्नत जीवन प्राप्त करते हैं।